Balika Vidyapith, Lakhisarai

Class 11Sc Sub- CCA Date 09 10 2020

प्रिय विद्यार्थियों! आज सह-शैक्षणिक गतिविधि के अन्तर्गत जटिल स्थितियों से निपटने हेतु किन चीजों को दृष्टिगत रखते हुए जीवन के पथ को राजपथ बनाया जा सकता है | आइए आप निम्नांकित को ध्यान से पढ़ें|

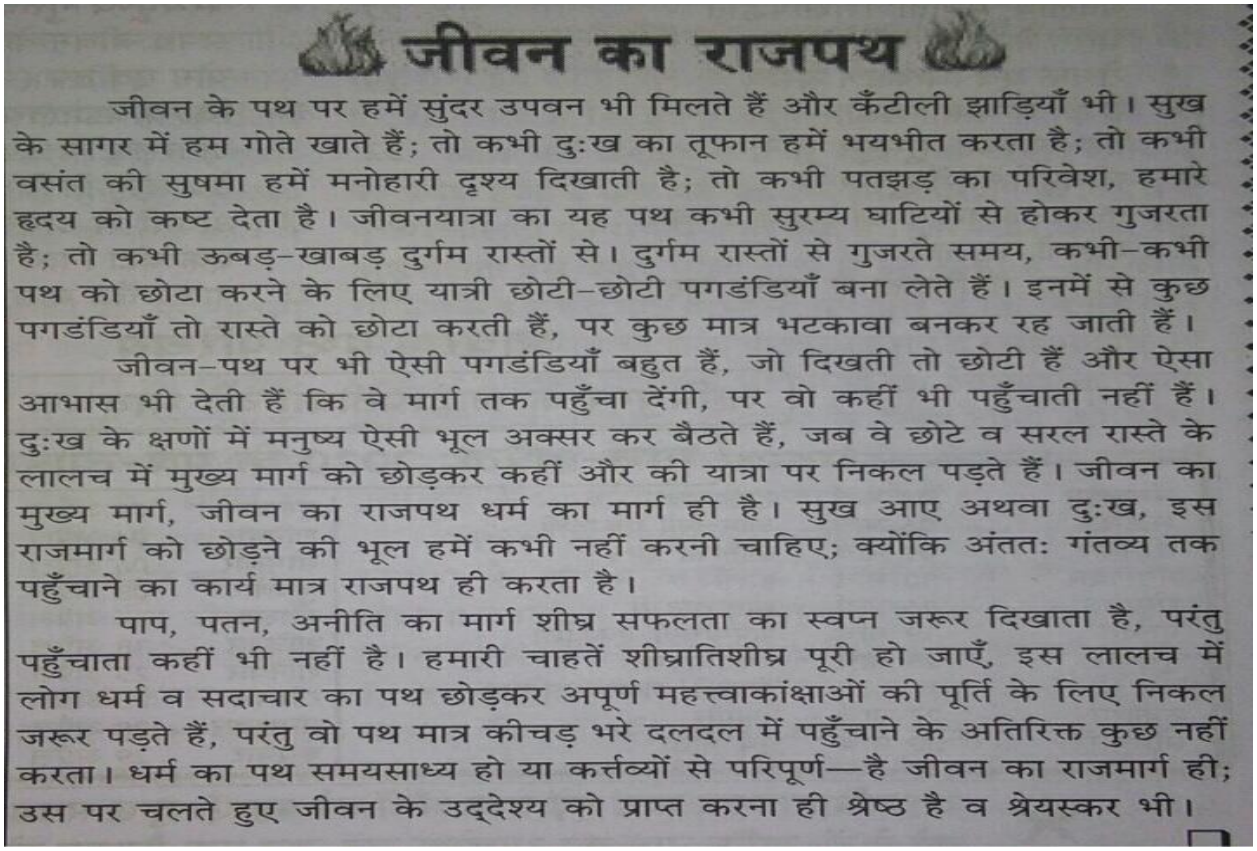

जीवन का राजपथ

जीवन के पथ पर हमें सुंदर उपवन भी मिलते हैं और कँटीली झाड़ियाँ भी। सुख के सागर में हम गोते खाते हैं; तो कभी दु:ख का तूफान हमें भयभीत करता है; तो कभी वसंत की सुषमा हमें मनोहारी दृश्य दिखाती है; तो कभी पतझड़ का परिवेश, हमारे हृदय को कष्ट देता है। जीवनयात्रा का यह पथ कभी सुरम्य घाटियों से होकर गुजरता है; तो कभी ऊबड़-खाबड़ दुर्गम रास्तों से। दुर्गम रास्तों से गुजरते समय, कभी-कभी पथ को छोटा करने के लिए यात्री छोटी-छोटी पगडंडियाँ बना लेते हैं। इनमें से कुछ पगडंडियाँ तो रास्ते को छोटा करती हैं, पर कुछ मात्र भटकावा बनकर रह जाती हैं।

जीवन-पथ पर भी ऐसी पगडंडियाँ बहुत हैं, जो दिखती तो छोटी हैं और ऐसा आभास भी देती हैं कि वे मार्ग तक पहुँचा देंगी, पर वो कहीं भी पहुँचाती नहीं हैं। दु:ख के क्षणों में मनुष्य ऐसी भूल अक्सर कर बैठते हैं, जब वे छोटे व सरल रास्ते के लालच में मुख्य मार्ग को छोड़कर कहीं और की यात्रा पर निकल पड़ते हैं। जीवन का मुख्य मार्ग, जीवन का राजपथ धर्म का मार्ग ही है। सुख आए अथवा दु:ख, इस राजमार्ग को छोड़ने की भूल हमें कभी नहीं करनी चाहिए; क्योंकि अंतत: गंतव्य तक पहुँचाने का कार्य मात्र राजपथ ही करता है।

पाप, पतन, अनीति का मार्ग शीघ्र सफलता का स्वप्न जरूर दिखाता है, परंतु पहुँचाता कहीं भी नहीं है। हमारी चाहतें शीघ्रातिशीघ्र पूरी हो जाएँ, इस लालच में लोग धर्म व सदाचार का पथ छोड़कर अपूर्ण महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए निकल जरूर पड़ते हैं, परंतु वो पथ मात्र कीचड़ भरे दलदल में पहुँचाने के अतिरिक्त कुछ नहीं करता। धर्म का पथ समयसाध्य हो या कर्त्तव्यों से परिपूर्ण—है जीवन का राजमार्ग ही; उस पर चलते हुए जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करना ही श्रेष्ठ है व श्रेयस्कर भी।